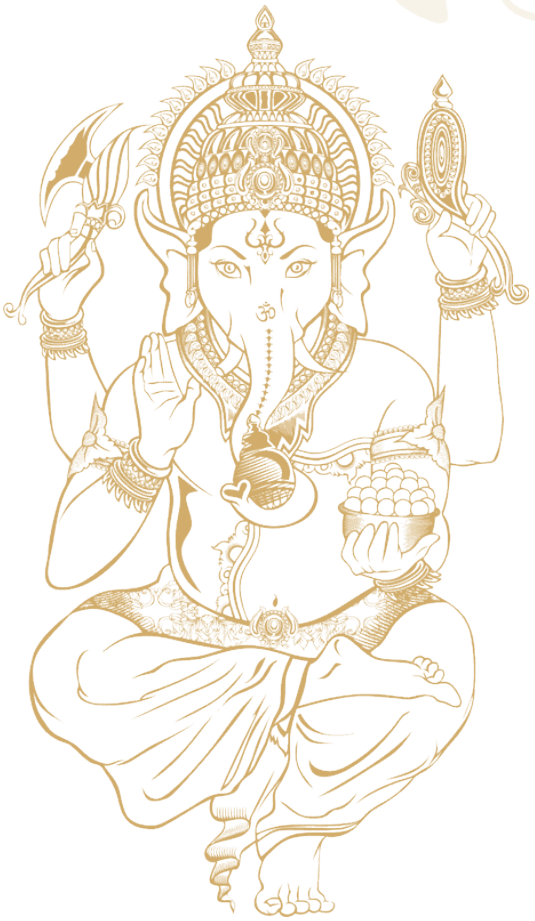

Rawnka ji

09 Mar 2026

08:36 AM

Ranchi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121621101**

तिथि 09/03/2026 **समय** 08:36:00 **वार** सोमवार **स्थान** Ranchi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:29
अक्षांश 23:22:00 उत्तर **रेखांश** 85:20:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:11:20 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	19:54:38 घं
वेलान्तर	00:10:33 घं
सूर्योदय	06:03:45 घं
सूर्यास्त	17:55:04 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	चैत्र
पक्ष	कृष्ण
तिथि	6
नक्षत्र	विशाखा
योग	हर्षण
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	ते-तेजवन्त
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	गुरु
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

गुरु 4वर्ष 6मा 12दि

गुरु

09/03/2026
20/09/2030

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	09/03/2026
चन्द्र	22/05/2027
मंगल	27/04/2028
राहु	20/09/2030

योगिनी

धान्या 0वर्ष 10मा 6दि

धान्या

09/03/2026
13/01/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	09/03/2026
संकटा	14/10/2026
मंगला	14/11/2026
पिंगला	13/01/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			12:55:04	मेष	अश्विनी	4	केतु	बुध	---	0:00			
सूर्य			24:19:26	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	शत्रु राशि	1.26	अमात्य	पितृ	जन्म
चंद्र			29:33:15	तुला	विशाखा	3	गुरु	चंद्र	सम राशि	1.19	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	10:55:26	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	सम राशि	1.08	पुत्र	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध	व	अ	20:57:51	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	सम राशि	1.25	भ्रातृ	ज्ञाति	जन्म
गुरु	व		20:52:10	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.36	मातृ	धन	जन्म
शुक्र			09:06:35	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	उच्च राशि	1.27	ज्ञाति	कलत्र	सम्पत
शनि			08:28:54	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	सम राशि	0.82	कलत्र	आयु	सम्पत
राहु	व		14:41:10	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु	व		14:41:10	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

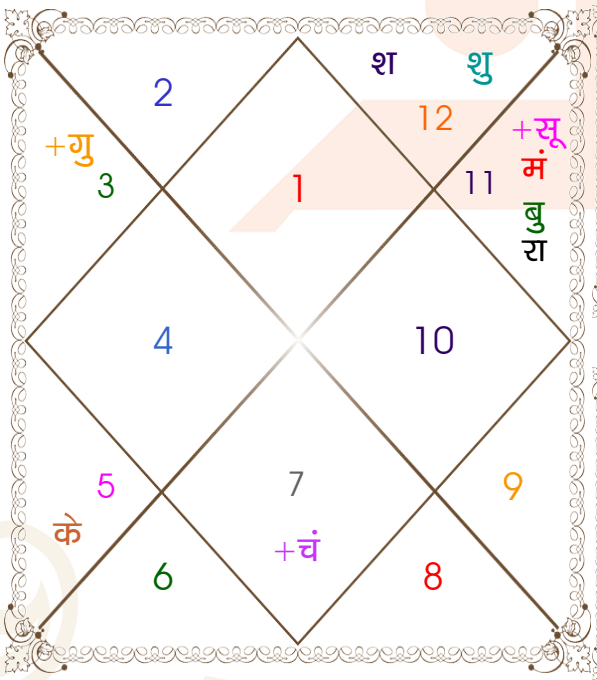

चन्द्र कुंडली

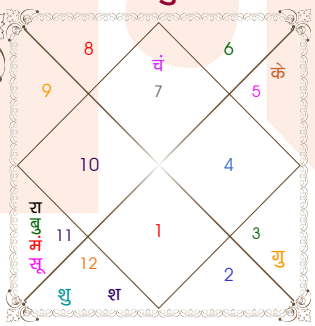

नवमांश कुंडली

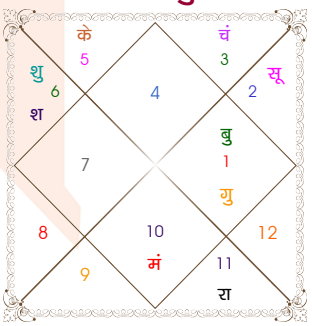

सर्वाष्टकवर्ग

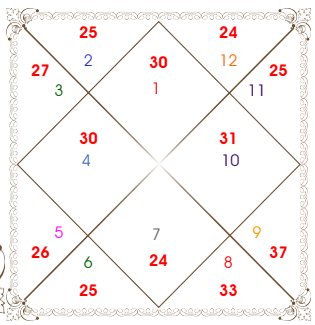

दशमांश कुंडली

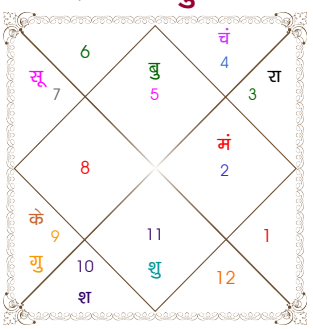

नक्षत्रफल

आपका जन्म विशाखा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, नाड़ी अन्त्य, योनि व्याघ्र, गण राक्षस तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "ते" या "तै" से प्रारम्भ होगा।

आप हमेशा अपनी स्त्री के वश में रहेंगे तथा अधिकांश ग्रहस्थ संबंधी कार्यों को उसी के निर्देश तथा सलाह से सम्पन्न करेंगे। उसका आपके ऊपर इतना प्रभाव होगा कि आप उसकी आज्ञा के बिना स्वतंत्र रूप से कुछ करने में अपने आपको असमर्थ सा अनुभव करेंगे। आपका स्वभाव भी अभिमानी होगा तथा आप अपनी इस प्रवृति का समय समय अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। शत्रुपक्ष पर विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे तथा आपका कोई भी दुश्मन आपके समक्ष नही टिकेगा। साथ ही आप उग्र स्वभाव के भी होंगे तथा अकारण ही छोटी छोटी बातों में उत्तेजित होते रहेंगे। अतः इससे कई बार आप अतिरिक्त परेशानी का सामना करेंगे।

गर्वी दारवशो जितारिरधिक क्रोधी विशाखोद्भवः।
जातक परिजातः

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक घमंड, हमेशा अपनी पत्नी के वश में रहने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अत्यधिक क्रोधी स्वभाव का होता है।

कभी कभी आप अन्य जनों के विरूद्ध अकारण ही अपने मन में द्वेष भावना को रखने वाले होंगे। यदि कोई अन्य आदमी सफलता प्राप्त करता हैं या कोई विशेष उपलब्धि उसे प्राप्त होती हैं तो उसके प्रति आपके मन में व्यर्थ ही ईर्ष्या तथा द्वेष की भावना उत्पन्न हो जाएगी। दूसरों की चीजों को देख कर आपके मन लोभ की भावना उत्पन्न होगी जिससे आप मानसिक रूप से हमेशा आन्दोलित रहेंगे। आपका शरीर तजे युक्त तथा आकर्षक रहेगा तथा बोलने में आप अत्यन्त ही चतुर रहेंगे एवं इसी वाक्यटुता के आधार पर कई महत्वपूर्ण सफलताएं भी अजित करेंगे।

ईर्ष्युर्लुब्धोः द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक ईर्ष्या तथा द्वेष करने वाला, लोभी, कान्तियुक्त, वाक्चतुर तथा कलहप्रिय होता है।

आप प्रारम्भ से ही धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति रहेंगे तथा देवताओं के हवनकार्यादि धार्मिक कृत्यो को करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आप का मित्रवर्ग भी सीमित रहेगा।

सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसोम्यः।

यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवादि पूजन के निमित हवनादि कार्यों में रत रहने वाला, धातुक्रिया में कभी उग्र तो कभी सौम्यता का प्रदर्शन करने वाला तथा किसी का भी मित्र नहीं होता है।

आप अर्न्तमन में दया के भाव की भी अल्पता कभी कभी दृष्गिोचर होगी। साथ ही समाज में अन्य जनों से भी आपके प्रेमपूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे।

अतिलुब्धोऽतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः।
विशाखायां नरो जातः वैश्याजन रतो भवेत।।
मानसागरी

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अति लोभी, घमंडी, निष्ठुर, झगड़ा करने वाला तथा अन्य स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ हैं। आप जीवन में धन धान्य से पूर्ण रूपेण सम्पन्न रहेंगे तथा श्रेष्ठ एवं गुणवान स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों तथा सोना चांदी आदि मूल्यवान धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगे। देखने में आप का शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ रहेगा। आप एक विद्वान पुरूष रहेंगे तथा चल अचल सम्पत्ति से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न सुखसंसाधनों का आप नित्य उपभोग करते रहेंगे। आपकी सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी तथा आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुख से व्यतीत होगा। आपका अन्य लोग से मधुर एवं सुशील व्यवहार रहेगा।

तुला राशि में उत्पन्न होने के कारण आप शरीर तथा मुख से देखने में सुन्दर रहेंगे। आपकी आखें बड़ी तथा नाक ऊंची होगी। समाज में अन्य जनों से आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे तथा विविध प्रकार के वाहन साधनो से भी सुसम्पन्न रहेंगे। वाहन एवं भूमि आदि जायदाद को आप शक्ति शाली होंगे तथा इनसे पूर्ण रूपेण धनार्जन करके धनैश्वर्य से सर्वथा युक्त रहेंगे एवं आनन्दपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे तथा आपका समाज में पूर्ण प्रभाव रहेगा जिससे लोग आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। पत्नी से आप हमेशा पराजित से रहेंगे तथा समस्त सांसारिक कार्यों को उसी की भावना एवं सलाह से सदा सम्पन्न करेंगे। नाना प्रकार के कार्यों को सफलतापूर्वक करने में आप दक्षता प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा तथा नियमानुसार इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। धन धान्यादि को संग्रह करने की प्रवृति से भी आप युक्त रहेंगे तथा बन्धु वर्ग के कल्याण कार्यों को करने में हमेशा तत्पर रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विकमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।

धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप समाज में देव, ब्राहमण तथा भद्रजनों की सेवा करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। आप एक श्रेष्ठ विद्वान होंगे तथा शुद्धता से रहकर अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। आपका शरीर भी सुगन्धित रहेगा। आपको यात्रा तथा भ्रमणादि का विशेष शौक रहेगा अतः इसी में अपने अधिकांश समय को व्यतीत करेंगे। क्रय विक्रय के कार्य में आप अत्यन्त चतुराई का प्रदर्शन करेंगे। आप समाज में देववाचक शब्द के द्वितीय नाम को धारण करके समाज में ख्याति प्राप्त कर सकेंगे। आप अपने समीपी संबंधियों तथा बन्धुओं का प्रयत्न पूर्वक भलाई तथा सहयोग करेंगे। परन्तु बाद में इन्ही लोगों के द्वारा आपको समाज में अपेक्षित भी होना पड़ेगा।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप में धैर्य की पूर्ण प्रधानता रहेंगी अतः अपने अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। न्याय के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेंगी तथा स्वयं भी हमेशा निष्पक्ष भाव से अपने भावों को स्पष्ट करेंगे। आपकी इस निष्पक्षता तथा न्याय के प्रति श्रद्धा को देखकर अन्य लोग अपने विवादों का समाधान करने के लिए आपको मध्यस्थ या पंच बनाकर आपका फैसला स्वीकार करेंगे। आपकी सन्तति भी अल्प मात्रा में ही रहेंगी तथा भाग्योदय भी काफी विलम्ब से होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद न बङा अपितु मध्यम रहेगा। सरकार के उच्च अधिकारी तथा पदाधिकारी वर्ग को प्रसन्न करने में आप चतुर होंगे तथा इन लोगों से पूर्ण मान सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। कभी कभी आप अत्याधिक बोलेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता होगी क्यो कि लोग आपसे ऐसी अपेक्षा नही करेंगे। साथ ज्योतिष शास्त्र का भी आपको न्यूनाधिक ज्ञान रहेगा। भाइयों एवं सेवक जनों के प्रति आप पूर्ण रूप से अनुरक्त रहेंगे।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वो।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

कभी कभी आप अनुचित अवसर पर अपने क्रोध का प्रदर्शन करेंगे। इससे आपको

मानसिक तथा आर्थिक परेशानी का भी सामना करना पड़ सकेगा तथा दुःखनानुभूति भी करनी पड़ेगी। आप मधुर वाणी का अपने सम्भाषण में उपयोग करेंगे जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न एवं करूणा की भावना भी विद्यमान रहेगी जिसका प्रदर्शन आप जीवन में समयानुसार करती रहेंगी। आपकी आखें हमेशा चंचल रहेगी तथा धनागमन भी चंचलता से ही होगा अर्थात् कभी अत्याधिक तथा कभी अत्यल्प। इससे आपकी आथिक स्थिति हमेशा विषम ही बनी रहेगी। आप घर में बलवान तथा बाहर निर्बलता का अहसास करेंगे। मित्रो के मध्य आप प्रिय रहेंगे तथा विदेश में भी निवास कर सकेंगे।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

अपने जीवन काल में विविध प्रकार के वाहनों तथा ऐश्वर्य वैभव से आप सुसम्पन्न रहकर इनका आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे। आपकी प्रवृति दानशील रहेंगी तथा दीन दुःखियों की यथा शक्ति आप सहयोग तथा सहायता करते रहेंगे। स्त्री के आप प्रिय रहेंगे तथा उससे पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी अनावश्यक रूप से अधिक मात्रा में बोलने वाले होंगे। आपका मन में भी करूणा के भाव की परिलक्षित होगा। लेकिन साहस का आप में अभाव नही रहेगा। अपने साहसी स्वभाव के कारण अधिकांश कार्यों को सिद्ध करने में आप सफल रहेंगे तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए स्वयं उत्सुक रहेंगे। आपकी छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही क्रोध प्रदर्शन करने की आदत रहेगी। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा शारीरिक बल का अभाव नही होगा परन्तु अन्य जनों से आपका कलह चलता रहेगा फलतः अधिकांश लोग आपसे वैमनस्य का भाव रखेंगे। अतः अन्य जनों से विनम्रता पूर्वक व्यवहार करें।

जीवन में आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित हो सकते हैं। आपकी आकृति भी सुन्दर होगी परन्तु वाणी कभी कभी अत्यन्त ही कटु होगी जो श्रोता को बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगेगी। अतः मधुर शब्दों का वार्तालाप में प्रयोग करने के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही कोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में पैदा होने के कारण आपकी प्रवृति स्वतंत्रता प्रिय रहेगी। आप किसी भी कार्य को अपनी इच्छानुसार करना पसन्द करेंगे तथा बाहरी किसी भी हस्तक्षेप को पसन्द नही करेंगे। धन धान्य का आप यत्नपूर्वक अर्जन करने में सर्वथा तत्पर रहेंगे। गुणों को ग्रहण करने की प्रवृति भी आपके मन में हमेशा विद्यमान रहेगी। आप अपने कार्यक्षेत्र में एक पूर्ण प्रशिक्षित विशेषज्ञ के रूप में कार्य करेंगे। अतः सभी लोग आपको हादिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। धन वैभव तथा ऐश्वर्य का आपके पास अभाव नही रहेगा तथा इससे पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न होकर जीवन व्यतीत करेंगे। लेकिन आप स्वयं ही अपनी प्रशंसा अपने मुख से करेंगे अतः इससे कभी कभी आपकी सामाजिक अवमान होगी।

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा

सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिलकरण, गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शुक्ल योग, शतभिषा नक्षत्र तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवग्रहनिर्माण, कयविक्रयादि अन्य शुभ कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी साथ ही गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनु राशि के चन्द्रमा को भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सर्वथा वजित ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण रूप से सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अच्छा नही चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान तथा अन्य समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी जी की उपासना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, चावल, श्वेत चन्दन आदि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति मिलेगी तथा अशुभ फल भी कम ही होंगे। साथ ही शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप सम्पन्न करवाने चाहिये।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुकाय नमः।